पद ५७

(राग: भैरवी - ताल: पंजाबी)

मिथुनसुखदानी ही श्यामा। श्यामला सुमंगलनामा।।धु.।। संध्या मिथुन निषेध विधि मिथुन हे। अग्निमथन सत्कर्मा।।१।। प्राणापान मिथुन हठसिद्धि। अर्केंदु मिथुन ती आमा।।२।। कपाल कुहरीं जिव्हा मैथुनीं। अमर देह सुखसीमा।।३।। जीवात्माऽरणी प्रणव उत्तरारणी। ज्ञानमथन निजधामा।।४।। आत्मलिंग शुभ शांभवी मैथुनी। देहीं प्रगटे शिवमहिमा।।५।। ब्रह्मस्फूर्ति मिथुन लीलाकृति। चिन्मार्तांड सुनामा।।६।।